ई-समाचार

द्विमासिक समाचार पत्रिका

अंक - 05 | मई-जून | वर्ष - 2015

योग दिवस

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर संपूर्ण भारत की भाँति संस्थान के सामंतपुरी परिसर के प्रेक्षागृह में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के छात्रों , संकायों एवं स्टाफ सदस्यों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। 21 जून, 2015 दिन रविवार को आयोजित होने वाले कार्यक्रम से पूर्व 19 एवं 20 जून को दो दिवसीय अभ्यास सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें योग, प्रणायाम एवं चितंन आदि विविध आयामों का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम का संचालन आयुष मंत्रालय द्वारा दिए गए निर्देशों के आधार पर किया गया जिसमें योग के विभिन्न आसान एवं प्रणायम के बारे में जानकारी प्रदान की गई थी। कार्यक्रम का आयोजन विषय विशेषज्ञ प्रशिक्षकों के मार्दर्शन में किया गया जिससे प्रशिक्षुओं को इसके लाभ की जानकारी हो सके।

योग प्रशिक्षक द्वारा सफलतपूर्वक प्रशिक्षण प्रदान करने के उपरांत संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार ने उपस्थित सभी सदस्यों को स्काइप के माध्यम से संबोधित करते हुए अपने योग अभ्यास के साथ निजी उपलब्धियों के अनुभव को सांझा। उन्होंने अपने संबोधन में योग की विज्ञान एवं तकनीकी लाभ की सराहना की और संस्थान सदस्यों द्वारा प्राप्त किए जा रहे लाभ की ओर भी अपनी प्रशंसा व्यक्त की। इसके साथ ही उन्होंने योग को अपने दैनिक जीवन की गतिविधियों में जोड़ने का आह्वान किया और कहा कि आज भारत की इस परंपरा को संपूर्ण विश्व अपना रहा है हमें भी इसे अपने दैनिक जीवन की गतिविधियों में अंगीकृत करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही उन्होंने उन लोगों की भी प्रशंसा कि जो योग के लाभ को समझते हुए इस मार्ग पर निरंतर प्रशस्त है। कार्यक्रम का समापान डी.ए.वी. स्कूल, यूनिट के छात्रों द्वारा योग आसान पर आधारित “वंदे उत्कल जननी” नामक देशभक्तिपूर्ण से ओत-प्रोत गीत के साथ हुआ। कार्यक्रम के अंत में प्रो.एस.के.महापात्र, संकायाध्यक्ष (छात्र कार्य) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए इसके लाभ पर प्रकाशन डालते हुए योग की महत्ता को समझते हुए सभी को इसे अपने जीवन की दैनिक गतिविधियों में जोड़ने की अपली की और कहा कि ऐसा करने पर हम निरंतर स्वस्थ रह सकते हैं।

हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है, इसमें कोई संदेह नहीं। - अनंत गोपाल शेवड़े।

स्वच्छ भारत अभियान – स्वच्छता एक पहल

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 22-26 जून, 2015 के दौरान स्वच्छ भारत अभियान – स्वच्छता एक पहल का आयोजन किया गया। इस दौरान संस्थान में स्थित विभिन्न कार्यालयों/ अनुभागों में सफाई कार्यक्रम आयोजित की गई। दिनांक 25-26 जून, 2015 को संस्थान के तोषाली भवन तथा सामंतपुरी परिसर में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राजकुमार ने गांधी जी को फोटो पर पुष्प अर्पित करते हुए उपस्थित सभी संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता के लाभ से परिचित कराया और जीवन के अपने अनुभवों को सांझा। उन्होंने अपने संबोधन में भौतिक सफाई के साथ-साथ मन के भीतर की सफाई पर भी जोर दिया और कहा कि स्वच्छता की शुरुआत सर्वप्रथम अपने भीतर से होनी चाहिए। जब आपका मन साफ रहेगा तो आप स्वयं गंदगी करने से तथा गंदगी फैलाने वाले को रोक सकते है। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के सदस्यों ने संस्थान के विभिन्न परिसर की सफाई की।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. डॉ. श्यामल चटर्जी , सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 06-08 मई 2015 के दौरान पीआरएल, अहमदाबाद में आयोजित एक्सप्लोरिंग फंडामेंटल फिजिक्स यूजिंग एटॉमिक सिस्टम्स (ईएफपीएएस 2015) में "**इंटरेक्शन ऑफ इलेक्ट्रॉन्स एंड आयन्स विथ मॉलिक्यूल एंड सर्फेस**" विषय पर पोस्टर प्रस्तुत किया।

2.डॉ. पद्मलोचन बेरा, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 02 जून से 01 जुलाई 2015 के दौरान साईबर डीएनए रिसर्च सेंटर, यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थ कॉरलोनिया एट चारलोटे, एनसी, यूएसए में अनुसंधान कार्यों हेतु दौरा किया।

3. डॉ. देबदत्त स्वाईं, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 16.05.2015 से 25.05.2015 के दौरान ग्रेन कैनरिया, स्पैन में आयोजित अटलांटिक रेडियो साईंस कॉन्फरेंस – 2015 में भाग लिया।

सस्ते घर : पदार्थ एवं प्रौद्योगिकी पर कार्यशाला

आधारिकं सरचना विद्यापीठ, भारतीय प्रौद्योगिकी भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 19.06.2015 को "सस्ते घर : पदार्थ एवं प्रौद्योगिकी" विषय पर एक दिवस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ओडिशा राज्य सरकार के मुख्य सचिव श्री जी.सी. पति और सम्मानीय अतिथि के रूप में इंजी. नलिनी कांत प्रधान, ईआईसी-सह सचिव, कार्य विभाग, ओडिशा सरकार उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान श्री पति ने अपने बहुमूलय अनुभवों को सांझा और राष्ट्रीय योजना के तहत 2022 तक सभी को घर उपलब्ध कराने की योजना पर राज्य की विभिन्न योजनाओं पर चर्चा की। इस योजना की पूर्ति लिए उन्होंने राष्ट्र के महत्वपूर्ण तकनीकी संस्थानों जैसे आईआईटी एवं एनआईटी के तकनीकी विषय विशेषज्ञों से आगे बढ़कर इस योजना को सफल बनाने में अपने तकनीकी योगदान देने हेतु अपली की। सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित में श्री प्रधान ने राष्ट्र योजना के तहत सभी को घर देने पर अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि इस कार्य को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने के लिए ऐसे ही राष्ट्र के महत्वपूर्ण शैक्षणिक तकनीकी संस्थानों की आवश्यकता पर जोर डाला। उन्होंने कहा कि इन संस्थानों के अनुसंधान कार्यों की सहायता से हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो पाएंगे।

कार्यशाला के दौरान विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों ने कार्यशाला विषय पर अपने विचार व्यक्त किए और सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यशाला विषय के मुख्य वक्ता प्रो. देवदास मेनन, वरिष्ठ प्राध्यापक, अभियांत्रिकी विभाग, भा.प्रौ.सं. मद्रास थे। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान निम्न विषयों पर चर्चा की :-

1. जीएफआरजी (ग्लास फाइबर रेनफोर्स्ड जिपसम) पैनल विनिर्माण और कम लागत आवास हेतु इसका प्रयोग और तीव्र निर्माण।

2. औद्योगिक अपशिष्ट जैसे फलाई-ऐश तथा लाल मट्टी से हल्के भार वाले कंक्रीट का विकास

3. चक्रवात एवं भूकंप रोधी आवास के निर्माण हेतु सीमित राजगीरी प्रौद्योगिकी।

4. कम लागत आवास हेतु योजना स्वरूप।

कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि जो कम लागत वाले आवास परियोजना के साझेदार हैं उन लोगों ने कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला में कार्य विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, बीडीए, इडको के प्रतिनिधियों के साथ अभियांत्रिकी एवं वास्तुकला कॉलेजों के संकाय सदस्यों सहित लगभग 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला के अंत में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया था जिसमें कार्यशाला के विषय से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई। चर्चा का मुख्य विषय अधिक आवास : तीव्र एवं गुणवत्तापूर्ण निर्माण की चुनौतियाँ आदि थे।

सम्मान

1. डॉ. एस.आर. सामंतराय को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के सदस्य के रूप में चयनित किया गया।

2. डॉ.देबदत्त स्वाईं, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ को यूआरएसआई कमीशन बी स्कूल फॉर यंग साईंटिस्ट द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया।

आगंतुक अतिथि

दिनांक 20 मई 2015 के दौरान प्रो. मुतसुहिरो शीमा, कैमेस्ट्री एवं बायोमॉलिक्यूलर साईंस एवं प्रमुख, ग्लोबलाइजेशन प्रोमोशन ऑफिस, जीफू यूनिवर्सिटी, जापान ने अनुसंधान सहयोग कार्य हेतु संस्थान का दौरा किया।

हिंदी शिक्षण योजना की परीक्षा

हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 19-20 मई 2015 को आयोजित प्रवीण एवं प्राज्ञ पाठ्यक्रम की परीक्षा में संस्थान के कुल 13 कर्मचारियों ने परिक्षा दी। विदित है कि हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखने वाले केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए यह प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य होता है।

साहित्य स्तंभ

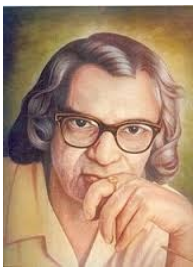

बीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध छायावादी कवियों के उत्थान का काल था। उसी समय अल्मोड़ा निवासी सुमित्रानंदन पंत उस नये युग के प्रवर्तक के रूप में हिन्दी साहित्य में अभिहित हुये। इस युग को जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और रामकुमार वर्मा जैसे छायावादी प्रकृति उपासक-सौन्दर्य पूजक कवियों का युग कहा जाता है। सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति चित्रण इन सबमें श्रेष्ठ था। उनका जन्म ही बर्फ़ से आच्छादित पर्वतों की अत्यंत आकर्षक घाटी अल्मोड़ा में मई 20, 1900 को हुआ था, जिसका प्राकृतिक सौन्दर्य उनकी आत्मा में आत्मसात हो चुका था। झरना, बर्फ, पुष्प, लता, भंवरा गुंजन, उषा किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढ़े गगन से उतरती संध्या ये सब तो सहज रूप से काव्य का उपादान बने। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षण का केंद्र बिंदु था, गौर वर्ण, सुंदर सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल, उंची नाजुक कवि का प्रतीक समा शारीरिक सौष्ठव उन्हें सभी से अलग मुखरित करता था। इनका वास्ताविक नाम गुसाई दत्त था। बच्चपन में अध्ययन काल के दौरान इन्हें अपना नाम पसंद नहीं था इसलिए इन्होंने अपना नाम बदलकर सुमित्रानंदन पंत्र रख लिया। छायावाद के प्रमुख प्रवर्तक के 115 वीं जन्मजयंती पर उनकी काव्य कृत्ति "गुंजन" का एक अंश **"क्या मेरी आत्मा का चिर धन"** प्रस्तुत है—

क्या मेरा आत्मता का चिर धन" -

क्या मेरी आत्मा का चिर-धन?
मैं रहता नित उन्मन, उन्मन!
प्रिय मुझे विश्व यह सचराचर,
तृण, तरु, पशु, पक्षी, नर, सुरवर,
सुन्दर अनादि शुभ सृष्टि अमर;
निज सुख से ही चिर चंचल-मन,
मैं हूँ प्रतिपल उन्मन, उन्मन।

मैं प्रेमी उच्चादर्शों का,
संस्कृति के स्वर्गिक-स्पर्शों का,
जीवन के हर्ष-विमर्षों का;
लगता अपूर्ण मानव-जीवन,
मैं इच्छा से उन्मन, उन्मन।

जग-जीवन में उल्लास मुझे,
नव-आशा, नव-अभिलाष मुझे,
ईश्वर पर चिर-विश्वास मुझे;
चाहिए विश्व को नव-जीवन
मैं आकुल रे उन्मन, उन्मन!

मार्गदर्शक
डॉ. आर.के.सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)
सलाहाकार
डॉ ए.के.सिंह, सहा. प्राध्यापक, एसबीएस,
डॉ.आर.झा, सहा. प्राध्यापक, एसबीएस,
संपादक
श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक